



Vikash Poddar

24 Jul 1997

10:10 PM

Deoghar

Model: Web-MyKundli

Order No: 121859801

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 24/07/1997
दिन _____: गुरुवार
जन्म समय _____: 22:10:00 घंटे
इष्ट _____: 42:35:27 घटी
स्थान _____: Deoghar
राज्य _____: Jharkhand
देश _____: India

अक्षांश _____: 24:31:00 उत्तर
रेखांश _____: 86:42:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:16:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 22:26:48 घंटे
वेलान्तर _____: -00:06:29 घंटे
साम्पातिक काल _____: 18:36:34 घंटे
सूर्योदय _____: 05:07:49 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:31:10 घंटे
दिनमान _____: 13:23:22 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 07:59:01 कर्क
लग्न के अंश _____: 18:32:42 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मीन - गुरु
राशि-स्वामी _____: मीन - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: उ०भाद्रपद - 3
नक्षत्र स्वामी _____: शनि
योग _____: अतिगण्ड
करण _____: गर
गण _____: मनुष्य
योनि _____: गौ
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: सिंह
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: झ-झूलेलाल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: स्वर्ण - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1919	श्रावण	2
पंजाबी	संवत : 2054	श्रावण	9
बंगाली	सन् : 1404	श्रावण	8
तमिल	संवत : 2054	आदी	9
केरल	कोल्लम : 1172	कर्कदम	8
नेपाली	संवत : 2054	श्रावण	9
चैत्रादि	संवत : 2054	श्रावण	कृष्ण 5
कार्तिकादि	संवत : 2054	आषाढ	कृष्ण 5

पंचांग

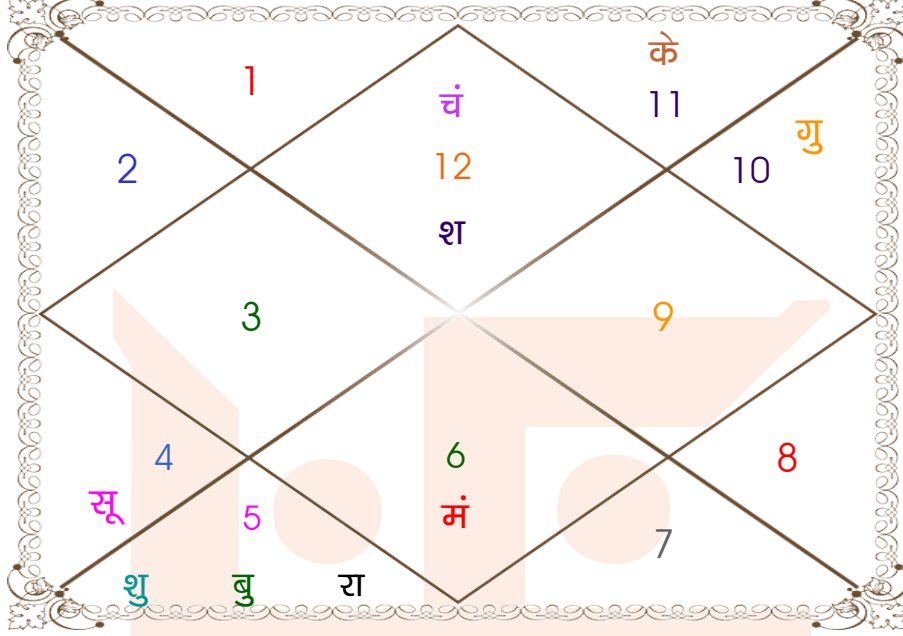
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 5
तिथि समाप्ति काल _____ : 17:13:18
जन्म तिथि _____ : 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : पू०भाद्रपद
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 09:50:04 घंटे
जन्म योग _____ : उ०भाद्रपद
सूर्योदय कालीन योग _____ : अतिगण्ड
योग समाप्ति काल _____ : 24:08:37 घंटे
जन्म योग _____ : अतिगण्ड
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 06:34:48 घंटे
जन्म करण _____ : गर
भयात _____ : 30:49:50
भभोग _____ : 55:36:22
भोग्य दशा काल _____ : शनि 8 वर्ष 5 मा 2 दि

घात चक्र

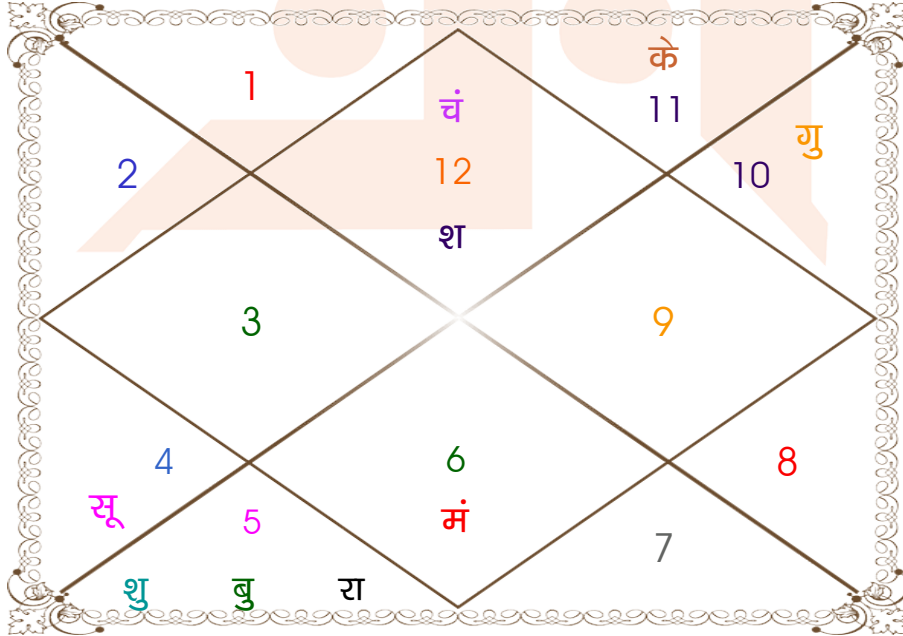
मास _____ : फाल्गुन
तिथि _____ : 5-10-15
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : आश्लेषा
योग _____ : वज्र
करण _____ : चतुष्पाद
प्रहर _____ : 4
वर्ग _____ : मृग
लग्न _____ : सिंह
सूर्य _____ : मिथुन
चन्द्र _____ : कुम्भ
मंगल _____ : कर्क
बुध _____ : कुम्भ
गुरु _____ : सिंह
शुक्र _____ : कन्या
शनि _____ : वृष
राहु _____ : तुला

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

श ल चं			
के			सू
गु			रा बु शु
			मं

लग्न कुंडली

		चं ल	श
			के
	सू		गु
शु रा	बु मं		

विंशोत्तरी
शनि 8वर्ष 5मा 2दि
शनि

24/07/1997

28/12/2106

शनि	27/12/2005
बुध	27/12/2022
केतु	27/12/2029
शुक्र	27/12/2049
सूर्य	27/12/2055
चन्द्र	27/12/2065
मंगल	26/12/2072
राहु	27/12/2090
गुरु	28/12/2106

योगिनी

भद्रिका 2वर्ष 2मा 18दि
धान्या

12/10/2023

12/10/2026

धान्या	12/01/2024
भ्रामरी	12/05/2024
भद्रिका	11/10/2024
उल्का	12/04/2025
सिद्धा	11/11/2025
संकटा	13/07/2026
मंगला	12/08/2026
पिंगला	12/10/2026

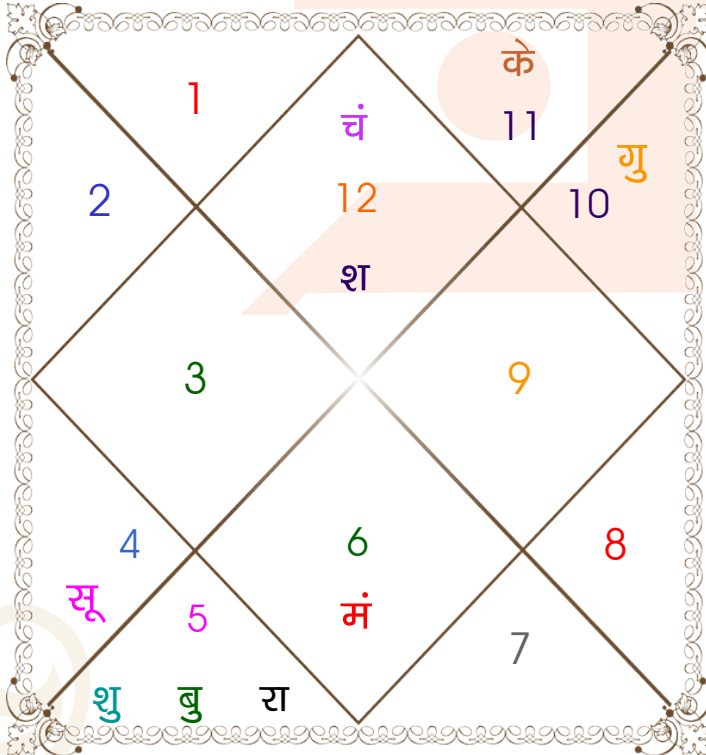
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	18:32:42	484:21:42	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	---
सूर्य			कर्क	07:59:01	00:57:18	पुष्य	2	8	चंद्र	शनि	केतु	मित्र राशि
चंद्र			मीन	10:45:16	14:22:29	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	सूर्य	सम राशि
मंगल			कन्या	23:59:54	00:33:45	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	मंगल	शत्रु राशि
बुध			सिंह	03:05:33	01:21:45	मघा	1	10	सूर्य	केतु	सूर्य	मित्र राशि
गुरु	व		मक	25:11:06	00:07:06	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	नीच राशि
शुक्र			सिंह	07:33:08	01:12:15	मघा	3	10	सूर्य	केतु	राहु	शत्रु राशि
शनि			मीन	26:28:58	00:00:50	रेवती	3	27	गुरु	बुध	गुरु	सम राशि
राहु			सिंह	26:59:10	00:00:54	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	सूर्य	शत्रु राशि
केतु			कुंभ	26:59:10	00:00:54	पू०भाद्रपद	3	25	शनि	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि
हर्ष	व		मक	13:04:41	00:02:23	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	---
नेप	व		मक	04:39:14	00:01:37	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	---
प्लूटो	व		वृश्चि	09:06:38	00:00:38	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	---
दशम भाव			धनु	14:34:25	--	पूर्वाषाढा	--	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	--

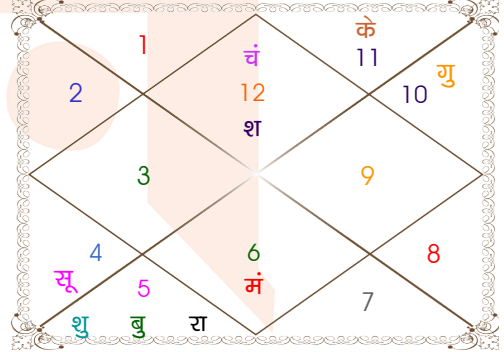
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:49:21

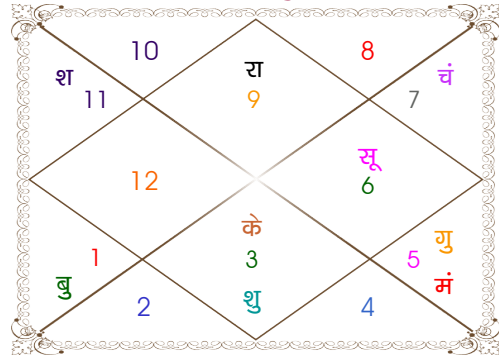
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 02:52:59	मीन 18:32:42
2	मेष 02:52:59	मेष 17:13:16
3	वृष 01:33:33	वृष 15:53:50
4	मिथुन 00:14:07	मिथुन 14:34:25
5	कर्क 00:14:07	कर्क 15:53:50
6	सिंह 01:33:33	सिंह 17:13:16
7	कन्या 02:52:59	कन्या 18:32:42
8	तुला 02:52:59	तुला 17:13:16
9	वृश्चिक 01:33:33	वृश्चिक 15:53:50
10	धनु 00:14:07	धनु 14:34:25
11	मकर 00:14:07	मकर 15:53:50
12	कुम्भ 01:33:33	कुम्भ 17:13:16

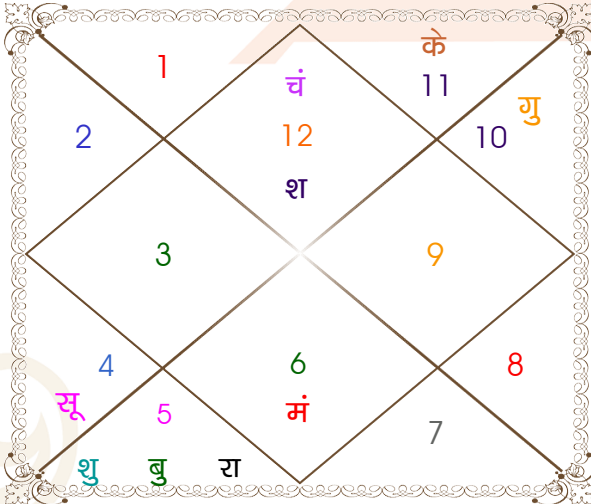
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	18:32:42
2	मेष	23:05:24
3	वृष	20:17:34
4	मिथुन	14:34:25
5	कर्क	09:56:03
6	सिंह	10:22:02
7	कन्या	18:32:42
8	तुला	23:05:24
9	वृश्चिक	20:17:34
10	धनु	14:34:25
11	मकर	09:56:03
12	कुम्भ	10:22:02

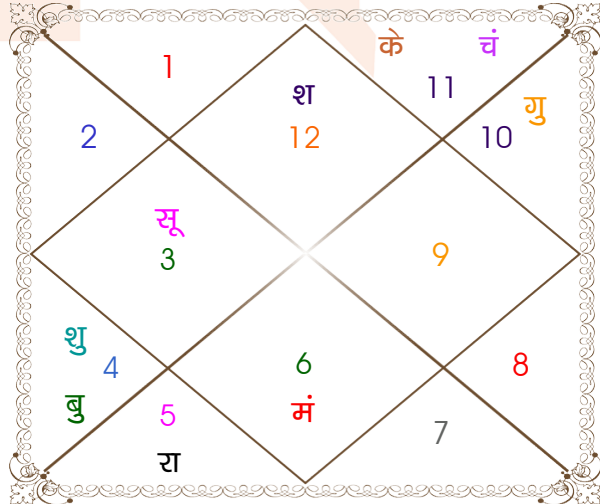
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 8 वर्ष 5 मास 2 दिन

शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष
24/07/1997	27/12/2005	27/12/2022	27/12/2029	27/12/2049
27/12/2005	27/12/2022	27/12/2029	27/12/2049	27/12/2055
00/00/0000	बुध 24/05/2008	केतु 25/05/2023	शुक्र 27/04/2033	सूर्य 15/04/2050
00/00/0000	केतु 21/05/2009	शुक्र 24/07/2024	सूर्य 27/04/2034	चंद्र 15/10/2050
00/00/0000	शुक्र 21/03/2012	सूर्य 29/11/2024	चंद्र 27/12/2035	मंगल 20/02/2051
24/07/1997	सूर्य 26/01/2013	चंद्र 30/06/2025	मंगल 25/02/2037	राहु 14/01/2052
सूर्य 29/11/1997	चंद्र 27/06/2014	मंगल 26/11/2025	राहु 26/02/2040	गुरु 02/11/2052
चंद्र 30/06/1999	मंगल 24/06/2015	राहु 15/12/2026	गुरु 27/10/2042	शनि 15/10/2053
मंगल 08/08/2000	राहु 11/01/2018	गुरु 21/11/2027	शनि 27/12/2045	बुध 21/08/2054
राहु 15/06/2003	गुरु 18/04/2020	शनि 29/12/2028	बुध 26/10/2048	केतु 27/12/2054
गुरु 27/12/2005	शनि 27/12/2022	बुध 27/12/2029	केतु 27/12/2049	शुक्र 27/12/2055

चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष
27/12/2055	27/12/2065	26/12/2072	27/12/2090	28/12/2106
27/12/2065	26/12/2072	27/12/2090	28/12/2106	00/00/0000
चंद्र 26/10/2056	मंगल 25/05/2066	राहु 08/09/2075	गुरु 13/02/2093	शनि 31/12/2109
मंगल 27/05/2057	राहु 12/06/2067	गुरु 01/02/2078	शनि 27/08/2095	बुध 09/09/2112
राहु 26/11/2058	गुरु 18/05/2068	शनि 08/12/2080	बुध 02/12/2097	केतु 19/10/2113
गुरु 27/03/2060	शनि 27/06/2069	बुध 27/06/2083	केतु 08/11/2098	शुक्र 18/12/2116
शनि 27/10/2061	बुध 24/06/2070	केतु 15/07/2084	शुक्र 10/07/2101	सूर्य 25/07/2117
बुध 28/03/2063	केतु 20/11/2070	शुक्र 16/07/2087	सूर्य 28/04/2102	00/00/0000
केतु 27/10/2063	शुक्र 20/01/2072	सूर्य 08/06/2088	चंद्र 28/08/2103	00/00/0000
शुक्र 27/06/2065	सूर्य 27/05/2072	चंद्र 08/12/2089	मंगल 03/08/2104	00/00/0000
सूर्य 27/12/2065	चंद्र 26/12/2072	मंगल 27/12/2090	राहु 28/12/2106	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 8 वर्ष 5 मा 18 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - राहु	केतु - गुरु	केतु - शनि	केतु - बुध	शुक्र - शुक्र
26/11/2025	15/12/2026	21/11/2027	29/12/2028	27/12/2029
15/12/2026	21/11/2027	29/12/2028	27/12/2029	27/04/2033
राहु 23/01/2026	गुरु 29/01/2027	शनि 24/01/2028	बुध 19/02/2029	शुक्र 17/07/2030
गुरु 15/03/2026	शनि 24/03/2027	बुध 21/03/2028	केतु 12/03/2029	सूर्य 16/09/2030
शनि 15/05/2026	बुध 11/05/2027	केतु 14/04/2028	शुक्र 11/05/2029	चंद्र 27/12/2030
बुध 08/07/2026	केतु 31/05/2027	शुक्र 20/06/2028	सूर्य 29/05/2029	मंगल 08/03/2031
केतु 30/07/2026	शुक्र 27/07/2027	सूर्य 10/07/2028	चंद्र 28/06/2029	राहु 06/09/2031
शुक्र 02/10/2026	सूर्य 13/08/2027	चंद्र 13/08/2028	मंगल 20/07/2029	गुरु 16/02/2032
सूर्य 21/10/2026	चंद्र 11/09/2027	मंगल 06/09/2028	राहु 12/09/2029	शनि 27/08/2032
चंद्र 22/11/2026	मंगल 30/09/2027	राहु 05/11/2028	गुरु 30/10/2029	बुध 15/02/2033
मंगल 15/12/2026	राहु 21/11/2027	गुरु 29/12/2028	शनि 27/12/2029	केतु 27/04/2033
शुक्र - सूर्य	शुक्र - चंद्र	शुक्र - मंगल	शुक्र - राहु	शुक्र - गुरु
27/04/2033	27/04/2034	27/12/2035	25/02/2037	26/02/2040
27/04/2034	27/12/2035	25/02/2037	26/02/2040	27/10/2042
सूर्य 15/05/2033	चंद्र 17/06/2034	मंगल 21/01/2036	राहु 09/08/2037	गुरु 05/07/2040
चंद्र 15/06/2033	मंगल 23/07/2034	राहु 25/03/2036	गुरु 02/01/2038	शनि 06/12/2040
मंगल 06/07/2033	राहु 22/10/2034	गुरु 21/05/2036	शनि 24/06/2038	बुध 23/04/2041
राहु 30/08/2033	गुरु 11/01/2035	शनि 27/07/2036	बुध 26/11/2038	केतु 19/06/2041
गुरु 18/10/2033	शनि 17/04/2035	बुध 25/09/2036	केतु 29/01/2039	शुक्र 28/11/2041
शनि 14/12/2033	बुध 13/07/2035	केतु 20/10/2036	शुक्र 31/07/2039	सूर्य 16/01/2042
बुध 04/02/2034	केतु 17/08/2035	शुक्र 30/12/2036	सूर्य 24/09/2039	चंद्र 07/04/2042
केतु 25/02/2034	शुक्र 27/11/2035	सूर्य 21/01/2037	चंद्र 24/12/2039	मंगल 03/06/2042
शुक्र 27/04/2034	सूर्य 27/12/2035	चंद्र 25/02/2037	मंगल 26/02/2040	राहु 27/10/2042
शुक्र - शनि	शुक्र - बुध	शुक्र - केतु	सूर्य - सूर्य	सूर्य - चंद्र
27/10/2042	27/12/2045	26/10/2048	27/12/2049	15/04/2050
27/12/2045	26/10/2048	27/12/2049	15/04/2050	15/10/2050
शनि 28/04/2043	बुध 22/05/2046	केतु 20/11/2048	सूर्य 01/01/2050	चंद्र 30/04/2050
बुध 09/10/2043	केतु 22/07/2046	शुक्र 30/01/2049	चंद्र 10/01/2050	मंगल 11/05/2050
केतु 15/12/2043	शुक्र 10/01/2047	सूर्य 21/02/2049	मंगल 17/01/2050	राहु 07/06/2050
शुक्र 25/06/2044	सूर्य 03/03/2047	चंद्र 28/03/2049	राहु 02/02/2050	गुरु 02/07/2050
सूर्य 22/08/2044	चंद्र 28/05/2047	मंगल 22/04/2049	गुरु 17/02/2050	शनि 31/07/2050
चंद्र 26/11/2044	मंगल 27/07/2047	राहु 25/06/2049	शनि 06/03/2050	बुध 26/08/2050
मंगल 02/02/2045	राहु 30/12/2047	गुरु 21/08/2049	बुध 21/03/2050	केतु 05/09/2050
राहु 25/07/2045	गुरु 16/05/2048	शनि 27/10/2049	केतु 28/03/2050	शुक्र 06/10/2050
गुरु 27/12/2045	शनि 26/10/2048	बुध 27/12/2049	शुक्र 15/04/2050	सूर्य 15/10/2050

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

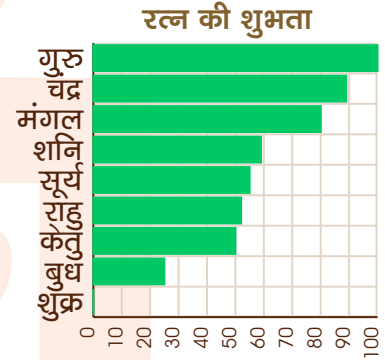
मूलांक	6
भाग्यांक	3
मित्र अंक	3, 4, 6, 9
शत्रु अंक	1, 7, 8
शुभ वर्ष	24,33,42,51,60
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	वृश्चिक, धनु
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	जगदम्बा
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	89%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख
मूंगा	मंगल	80%	दम्पति, धन, भाग्योदय
नीलम	शनि	59%	स्वास्थ्य, धनार्जन, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	55%	सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
गोमेद	राहु	52%	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	50%	कम खर्च, स्वास्थ्य
पन्ना	बुध	25%	शत्रु व रोग, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
हीरा	शुक्र	0%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शनि	27/12/2005	34%	77%	67%	38%	100%	0%	72%	58%	25%
बुध	27/12/2022	61%	77%	80%	50%	100%	0%	59%	52%	50%
केतु	27/12/2029	34%	77%	86%	25%	100%	0%	44%	28%	62%
शुक्र	27/12/2049	34%	77%	80%	38%	100%	0%	66%	58%	56%
सूर्य	27/12/2055	67%	95%	86%	25%	100%	0%	44%	28%	25%
चंद्र	27/12/2065	61%	100%	80%	38%	100%	0%	59%	28%	25%
मंगल	26/12/2072	61%	95%	92%	0%	100%	0%	59%	28%	56%
राहु	27/12/2090	34%	77%	67%	25%	100%	0%	66%	64%	25%
गुरु	28/12/2106	61%	95%	86%	0%	100%	0%	59%	52%	50%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/07/1997-17/04/1998	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041	26/09/2041-11/12/2043	23/06/2044-30/08/2044
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2052-14/05/2054	02/09/2054-05/02/2055	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
अष्टम स्थानस्थ ढैया	04/11/2070-05/02/2073	31/03/2073-23/10/2073	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	12/04/2081-03/08/2081	07/01/2082-20/03/2084	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया

फल

सम
अशुभ
सम
सम
सम

क्षेत्र

स्वास्थ्य
धन
सुख
दुर्घटना से बचाव
कम खर्च

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति सप्तम भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं चूंकि आपका मांगलिक दोष भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। साथ ही स्वभाव से ही उनमें उग्रता रहेगी। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं लेकिन यह अल्प समय के लिए होगा तथा दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही आप भी यदा कदा पित या गर्मी आदि से परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह कार्य में विलम्ब होने की संभावना रहेगी तथा विवाह से पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध रहेगा लेकिन अंत में आप को सफलता अवश्य प्राप्त होगी तथा सामान्य रूप से दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

सप्तम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जन्म दोषों से आपको परेशानी हो सकती है। दशम भाव पर मंगल की दृष्टि से कार्य क्षेत्र में आप परिश्रम एवं पराक्रम से इच्छित सफलता अर्जित करेंगे। समाज से भी न्यूनाधिक मान सम्मान की प्राप्ति होती रहेगी। लग्न पर दृष्टि के प्रभाव से स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा मानसिक अशान्ति की भी अनुभूति हो सकती है। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद उत्पन्न होंगे जिससे परिवार की शान्ति प्रभावित होगी लेकिन इसका दुष्प्रभाव अल्प मात्रा में ही रहेगा।

अतः अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं सम्पन्न बनाने के लिए आपको किसी ऐसे मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका परस्पर मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम,

अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि तथा राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। इससे आपके सुख सौभाग्य एवं ऐश्वर्य में वृद्धि होगी तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा। आपसी संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि का प्रभाव है।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और मंगल के कारण पितृदोष है।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें। दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें। ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक शिल्पकार, सुदेही, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, अतिकामी और प्रसन्न मुख वाला होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

सातवें भाव में मंगल हो तो जातक वातरोगी, राजभीरु, शीघ्रकोपी, कटुभाषी, स्त्रीदुःखी, धूर्त, मूर्ख, निर्धन, घातकी, धननाशक एवं ईर्ष्यालु होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म काल में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी वे अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान की भावना व्याप्त रहेगी तथा हमेशा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह संबंधी या व्यापार संबंधी कार्यों में भी वे अपना यथाशक्ति योगदान देंगे तथा सदैव आपकी सफलता की कामना करेंगे। इसके साथ ही सुख दुःख में वे आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनको समस्त महत्वपूर्ण कार्यों एवं क्षेत्रों में अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उसमें तनाव या कटुता आएगी परन्तु कुछ समय पश्चात् सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही उनकी शादी या व्यापार आदि कार्यों में भी आप उनकी वांछित सहायता करते रहेंगे।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मि, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

ग्यारहवें भाव में गुरु हो तो जातक व्यवसायी, धनिक, सन्तोषी, सुन्दरनिरोगी, लाभवान्, पराकमी, सद्ब्ययी, बहुस्त्रीयुक्त, विद्वान् राजपूज्य एवं अल्पसन्ततिवान् होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन,

बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

षष्ठभाव में राहु हो तो जातक शत्रुहन्ता, कमरदर्द पीड़ित, अरिष्टनिवारक, विदेशियों से लाभ, पराकमी, बड़े-बड़े कार्य करनेवाला, दीर्घायु, साहसी, धनी एवं प्रसिद्ध होता है।

सिंह राशि में राहु हो तो जातक चतुर, विचारक, सज्जन, नीति दक्ष एवं सत्पुरुष होता है।

केतु

बारहवें भाव में केतु हो तो जातक चंचल बुद्धि, धूर्त, ऋण तांत्रिक, अतव्ययी निर्बल स्वास्थ्य, पागलपन, मोक्ष प्राप्ति, अविश्वासी एवं जनता को भूल-प्रेतों की जानकारी द्वारा ठगने वाला होता है।

कुम्भ राशि में केतु हो तो जातक दुःखी, कर्णरोगी, भ्रमणशील, व्ययशील एवं साधारण धनी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- केतु
(27/12/2022 - 27/12/2029)

केतु की महादशा 27/12/2022 को आरम्भ और 27/12/2029 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु बारहवें भाव में स्थित है और इसकी दृष्टि छठे भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको आराम, साझेदारों से लाभ, विवाह और यात्रा हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको धन समृद्धि की प्राप्ति, उच्च शिक्षा तथा यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शनि की राशि में स्थित केतु के कारण गठिया, मासपेशियों में दर्द और वायु से संबंधित रोग हो सकते हैं। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन समस्या, बुखार, संक्रामक बीमारी, आँख में पीड़ा, चर्मरोग और निचले भागों में कष्ट हो सकता है। कुछ उपाय कर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक रहेगी। आय से अधिक व्यय होगा। जहाँ तक संभव हो सके से बचें। आप अपने प्रयास से धन संग्रह करेंगे। धन के आयोजन में सावधानी की जरूरत है। जीविका और व्यवसाय के लिए कम्प्यूटर, गुप्त-विद्या, नर्सिंग, रेडियोग्राफी, न्यूरोलॉजी आदि का चयन सकते हैं। डाक्टरी उपकरण, चमड़े के सामान, कम्प्यूटर, लिफ्ट, द्रव-इंजीनियरी, टेलीफोन, दवा आदि का व्यवसाय लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को बाहरी स्रोतों से लाभ होगा, साझेदारी तथा वाणिज्य-व्यापार में लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों के कारोबार में कुछ परिवर्तन होगा और सहकर्मियों तथा अधीनस्थों से सहायता मिलेगी। आपका विदेशी स्रोतों से कारोबार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

बुध की अन्तर्दशा में आपको जीवन का आराम मिलेगा। आपकी जमीन-जायदाद में वृद्धि किन्तु, सम्पत्ति के लेन-देन में सावधानी की जरूरत है। इस दशा में विदेश यात्रा की सम्भावना है जो लाभदायक सिद्ध होगी। शुक्र की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा की सम्भावना है।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। आप अपने अध्ययन का मार्ग या संस्था बदल सकते हैं। अपने स्तर को बनाए रखने के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। विज्ञान, भाषा विमान इंजीनियरिंग, तत्त्व-मीमांसा या गुप्त विद्या, रेडियोग्राफी दवा से संबंधित विषय आदि में आपकी रुचि हो सकती है। बौद्धिक क्षमता के सभी विषयों पर आधिपत्य होगा।

परिवार :

परिवार के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाए रखने के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा। आपके बच्चों को आपकी सहायता और मार्गदर्शन, की जरूरत होगी। आपके जीवन साथी का स्वास्थ्य कुछ खराब हो सकता है, शत्रुओं के कारण परेशानी और कार्यस्थान में परिस्थिति प्रतिकूल हो सकती है। आपकी माता को धन-समृद्धि की प्राप्ति और यात्रा होगी जबकि पिता की जमीन जायदाद में वृद्धि और प्रगति होगी तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को कार्यों में सफलता मिलेगी और जीवन में प्रगति होगी जबकि बड़ों को लाभ और आराम मिलेगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान व्यय, परिवर्तन और आध्यात्मिक कार्य में रुचि होगी। शुक्र के कारण छोटी यात्रा, कुछ बाधा, अचानक लाभ और हानि तथा स्वास्थ्य समस्या हो सकती है। सूर्य के कारण विरोधियों पर विजय और कुछ बाधा हो सकती है। चन्द्र के कारण बच्चों से सुख मिलेगा, परिवार में शिशु का जन्म होगा और धन तथा लाभ मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान यश और ख्याति मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और कार्यों में सफलता मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा, लाभ और व्यय होगा। बुध की अन्तर्दशा में आराम मिलेगा, विवाह और यात्रा होगी तथा व्यापार में लाभ में वृद्धि होगी।

**अंतर्दशा :- केतु - राहु
(26/11/2025 - 15/12/2026)**

आपके लिए केतु महादशा 27/12/2022 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 26/11/2025 को प्रारंभ होकर 15/12/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आपको स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। व्यापार का विस्तार होगा, कर्ज से मुक्ति मिलेगी। खेल-कूद में रुचि होगी। मामा पक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है। किराये से आमदनी में वृद्धि होगी, किरायेदार सहयोग करेंगे। खर्चे बढ़ सकते हैं, विदेशियों से संपर्क बढ़ेंगे, नयी मित्रता से लाभ होगा, यात्राएं होंगी।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं। आपके पिता प्रसिद्ध होंगे; उनकी तीर्थयात्राएं होंगी। माता लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए अचानक लाभ और यात्रा का संकेत है। आपकी संतान को परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो उनकी आय बढ़ेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, मातहत सहयोग करेंगे। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनिवार के दिन शिवजी की भैरव रूप में उपासना करें।

**अंतर्दशा :- केतु - गुरु
(15/12/2026 - 21/11/2027)**

आपके लिए केतु महादशा 27/12/2022 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 15/12/2026 को प्रारंभ होकर 21/11/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। शिक्षा उत्तम होगी। भाई-बहनों और चाचा से उत्तम संबंध होंगे। प्रभावशाली मित्र होंगे। संतान से सुख मिलेगा। विवाह हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी रहेगा, व्यापार में लाभ होगा। संचार माध्यम और लघु यात्राओं से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली और धनी होंगे। आपके पिता की आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। माता के जीवन में परिवर्तन आ सकते हैं। आपके भाई-बहनों के लिए सौभाग्य और धन का संकेत है। आपकी संतान भाग्यशाली होगी, उन्हें साझेदारी से लाभ होगा। अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय उत्तम होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए केसर, हल्दी, चने का दान करें।

**अंतर्दशा :- केतु - शनि
(21/11/2027 - 29/12/2028)**

आपके लिए केतु महादशा 27/12/2022 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 21/11/2027 को प्रारंभ होकर 29/12/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आपके काम प्रारंभिक व्यवधान के बाद बन जाएंगे। आप कर्मठ होंगे। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। व्यापार में लाभ होगा, यात्राएं हो सकती हैं। आप उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं, धनी बनेंगे। प्रसिद्धि, प्रोन्नति और व्यापार में लाभ का संकेत है। कार्यक्षेत्र की उपलब्धियों के कारण जनता सम्मान करेगी।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता को कार्यों और परीक्षा में सफलता मिलेगी। माता को उच्चपद प्राप्त हो सकता है। आपके भाई-बहनों के लिए धन, भूमि, वाहन और उत्साह का संकेत है।

आपकी संतान की विज्ञान में रुचि होगी, धनी बनेंगे, पिता से उत्तम संबंध होंगे, यात्रा होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में अवांछित परिवर्तन हो सकते हैं। परामर्शदाताओं को कठोर परिश्रम करना होगा। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए भोजन की पहली रोटी गाय को खिलाएं।

**अंतर्दशा :- केतु - बुध
(29/12/2028 - 27/12/2029)**

आपके लिए केतु महादशा 27/12/2022 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा की अवधि 11 मास 27 दिन होगी जो आपके लिए 29/12/2028 को प्रारंभ होकर 27/12/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, बुद्धि, लेखन और तर्कशक्ति का कारक है।

इस अवधि में आप स्पर्धियों पर विजयी रहेंगे। प्रसिद्धि और सम्मान का संकेत है। कार्यालय में वातावरण मधुर रहेगा। कार्यों में सफलता मिलेगी। अदालत में जीत होगी। अधिकांश क्षेत्रों में वर्तमान स्थिति बनी रहेगी। शुभ कार्यों पर खर्च बढ़ सकते हैं। अध्यात्म, ध्यान और तंत्र में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी की यात्राएं हो सकती हैं। आपके पिता कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे

**महादशा :- शुक्र
(27/12/2029 - 27/12/2049)**

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 27/12/2029 को आरम्भ होकर 27/12/2049 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो भावनात्मक आनन्द, अच्छे स्वाद, मनोरंजन और सुखमय जीवन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या में निम्न का होता है। आपकी जन्म कुण्डली में यह षष्ठ भाव में स्थित होकर द्वादश भाव को देख रहा है और इस भाव पर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् षष्ठ भाव, बीमारी, नौकरी, कर्मचारी, ऋण, शत्रु, मामा, कंजूसी तथा व्यथा का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है और इस भाव को प्रबलित का रहा है। अतः इस दशा काल में आपको कोई दुर्घटना या बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी तथा आप अपना जीवन सामान्य रूप से व्यतीत करेंगे।

अर्थ-संपत्ति :

शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है जो आपकी वित्तीय स्थिति में सुधार लाएगा। आप मुकदमे से संपत्ति बना सकते हैं। आप आरामदेह जीवन व्यतीत करने में समर्थ होंगे।

व्यवसाय :

इस दशा काल में आप दिन-प्रतिदिन के व्यवसाय के लिए कोई नर्सिंग होम आरंभ कर सकते हैं। आप आरामदेह जीवन का आनन्द ले सकेंगे। आपके मामा आपके व्यवसाय में सहायक हो सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

शुक्र षष्ठ भाव में स्त्री का अनुग्रह प्राप्त करने में अनुकूल है। आप इस दशा काल में अत्यंत स्त्री सुख प्राप्त करेंगे। आप इस तरह स्वेच्छाचरी हो जाएँगे और स्त्री के लिए कमजोरी अनुभव करेंगे जो निस्संदेह आपका पक्ष लेगी और आपके जीवन में सहायक होगी।

किन्तु इसका आपके पारिवारिक जीवन पर असर पड़ेगा तथा उसे कुछ अव्यवस्थित करेगा।
आपके जीवन साथी आपके सहायक होंगे।



**अंतर्दशा :- शुक्र - शुक्र
(27/12/2029 - 27/04/2033)**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 27/12/2029 को प्रारंभ होकर 27/12/2049 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 27/12/2029 को प्रारंभ होकर 27/04/2033 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठे भाव बीमारी, सुश्रुषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। शुक्र शुभ ग्रह है और विवाह, प्रेम और रति का कारक है। छठे भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 12वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में विपरीत लिंग के लोग आपकी ओर आकर्षित रहेंगे। चरित्र में गिरावट आ सकती है, जिससे स्वास्थ्य की हानि संभव है। आपका कोई शत्रु नहीं होगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें।